शांतिवन। टीचर ट्रेनिंग प्रोग्राम को सम्बोधित करते हुए दादी रतनमोहिनी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.वनिता, जूनागढ़ की ब्र.कु.वीणा, वराछा की ब्र.कु.तृप्ति एवं ध्यान पूर्वक सूनते हुए देशभर से आयी हुई बहनें।

त्याग से बनता है भाग्य

शांतिवन। युवावस्था को जीवन का स्वर्णिम काल भी काल भी कहा जाता है। क्योंकि इसी आयु में हम अपनी जीवन को एक नई दिशा देते हैं। वर्तमान समय हम जो निर्णय लेते हैं उसका प्रभाव हमारे भविष्य पर पड़ता है।

उक्त उद्‌गार दादी रतनमोहिनी ने राजयोग ट्रेनिंग में देशभर से आये हुए कुमारियों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि परमात्मा के दिव्य कार्य के लिए व्यक्तिगत जीवन को दिव्य बनाकर ईश्वरीय सेवाओं को आगे बढ़ाना यह बहुत ही महान कार्य है। वर्तमान समय पूरे विश्व में अनिश्चितता की स्थिति बनी हुई है, किसी को कोई समाधान नजर नहीं आता है। ऐसे समय पर अपना अमूल्य जीवन मानव सेवार्थ के लिए त्याग कर पवित्रता के व्रत को धारण कर विश्व को एक नई दिशा देना और परमात्मा की प्रत्यक्षता में मददगार बनना यह बहुत ही पुण्य का कार्य है।

माउण्ट आबू की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.गीता ने कहा कि आज के समय में युवायें अपनी शक्ति को न पहचानने के कारण अपनी ऊर्जा को विध्वसंक कार्यों में उपयोग कर रहा है। ऐसे में आपने जो अपने जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों को धारण कर समाज को श्रेष्ठ बनाने का जो लक्ष्य रखा है उससे पुन: भारत विश्व में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करेगा। आप जब स्वयं को दिव्य गुणों से सुसज्जित कर समाज की सेवा करेंगे तो उनलोगों को भी दिव्यता को अपनाने में बल मिलेगा। उन्होंने कहा कि आपने अपने जीवन में तन, मन, धन और समय से समाज की सेवा करने का जो श्रेष्ठ संकल्प लिया है वह सराहनीय है। आपने स्वैछिक निर्णयकर परमात्मा के कार्य को आगे बढ़ाने का जो लक्ष्य रखा है उसमें आप अवश्य ही कामयाब होंगे ऐसी हमारी शुभ आशा है।

चंड़ीगढ़ की ब्र.कु.वनिता ने आध्यात्मिक मूल्यों की शक्ति के बारे में बताते हुए कहा कि जीवन में त्याग और तपस्या का बड़ा योगदान होता है जिससे जीवन में दिव्यता आती है। और हम विपरीत परिस्थितियों में भी अपने मूल्यों के प्रति सजग रहकर समस्याओं से मुक्त रह सकते हैं। आज की महिलायें भौतिकता की चकाचौंध में अपने जीवन का मूल्य खोती जा रही है। ऐसे समय में आप परमात्मा की शिक्षाओं को जीवन में धारण कर शिव-शक्ति बनकर जीवन को एक नया आयाम देंगे ऐसी हमारी आशा है। जूनागढ़ की ब्र.कु.वीणा ने ट्रेनिंग में आयी हुई बहनों को परमात्मा के द्वारा चल रहे कार्यों की गुह्यता को स्पष्ट करते हुए कहा कि हम जीवन में निमित्त और निर्माण बनकर आध्यात्मिक ज्ञान को समाज में प्रसारित करना होगा।

बराछा की ब्र.कु.तृप्ति ने शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थ के प्रति संतुलन कैसे बनाएं इस पर प्रकाश डाला।

एक मास तक चले इस प्रशिक्षण के दौरान अनेक वरिष्ठ शिक्षिकाओं ने अपने-अपने अनुभवों के द्वारा लोगों को नई-नई प्रेरणायें दी।

आत्मविश्वास... पृष्ठ २ का शेष

करने के लिए जन्म लिया है। ऐसा अपने पर विश्वास रखें। आप जो स्वप्न में देख रहे हो ये आप बनकर बैठे हो ऐसी कल्पना करें। आप डॉक्टर बनना चाहते हो, तो आप अपने गले में स्टेथोस्कोप लटकाकर आप अपने दवाखाने में बैठे हो और सीरियस पेशेंट का जीवन बचाने में मदद कर रहे हो ऐसी कल्पना करें। उसके बाद छोटी-छोटी सिद्धियों के बदले, 'बेलडन', 'बैकअप', 'कीप इट अप', कहते रहो। आप सिद्धियां प्राप्त करने में सक्षम हो। ऐसे अपने आपमें विश्वास रखो। 'डूअर्स' - कार्य करतार बनें, 'डाउनर्स' - शंका करने वाले नहीं बनें। आत्मविश्वास बढ़ाने का यह छठवां कदम।

7. अजीवन सिखते रहो - आप कभी भी एम.बी.ए हो गए। मुझे सब आता है ऐसा नहीं समझना। आप जहां पहुंच हो वहां स्थिर रहना वा आगे बढ़ना है तो निरंतर सीखते रहो। अभ्यास में मश्गुल रहो, रिवाईज करते रहो। रिवर्जन करते रहो। निरंतर सीखना और सिखा हुआ याद रखने की आदत डालो। तब आपको भूल जाने का भय नहीं लगेगा यह है आत्मविश्वास बढ़ाने का सातवां कदम।

8. कोई भी ऐक क्षेत्र में काबिल बनें - आपको क्या बनना है वह तय करो। आपकी काबिलियत को बाहर लाइए। आपके इंटेरेस्ट के आधार से भविष्य की कीर्ति तय करो। फिर आपकी काबिलता और शक्ति को उसी दिशा में क्रियान्वित करो। आप जैसे-जैसे सफल होते जायेंगे आपका विश्वास बढ़ता जायेगा। अगर आप विद्यार्थी हैं तो डॉक्टर, क्रिकेटर, संगीतकार, गीतकार बनने का प्रयत्न करो और कोई एक कैरीयर पर नजर रखो और उसमें निपूर्ण बन जाओ।

9. निष्फलता से डरना नहीं - आप परीक्षा में या पसंदगी के लाईन में नहीं जा सकते या निष्फल होंगे तो क्या होगा? ऐसा डर नहीं रखो। क्योंकि इसमें कोई आकाश टूटकर गिर नहीं जायेगा। एक सफलता मिलने के पहले बहुत निष्फलता मिलती है। थोमस अल्वा ऐडीसन बिजली की शोध करते वक्त दस हजार बार प्रयोग किया फिर भी निस्फल हुए। फिर भी उन्होंने अभ्यास करना नहीं छोड़ा। अब सफल होने का चांस उज्ज्वल है। मार्ग में अवरोध, गड्ढे, ठोकरें, खायें, निष्फल हो सकते हैं लेकिन मन में आत्मविश्वास के साथ कहो कि - पर्वत को कभी पत्थर नहीं लगता।

स्वर्णिम संस्कृति... पृष्ठ 1 का शेष

सम्पन्न माता ही बच्चों के लिए चलता-फिरता ग्रन्थ व शास्त्र है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण नारी को सरस्वती, दुर्गा एवं लक्ष्मी के रूप में पूजा जाता है।

महिला प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा ब्र.कु.चक्रधारी ने कहा कि आज महिलायें विश्व के हर क्षेत्र में अपनी स्पर्धा का लोहा मनवाया है। उन्होंने कहा कि आज हर इंसान का नाता शांति के सागर परमात्मा से टूट गया है जिसके कारण वह अशांत हो गया है। महिला प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु.डॉ.सविता ने कहा कि नारी के लिए वंदे मातरम का नारा उसे अपने स्वमान की स्मृति दिलाता है। बालक को माता से ही पालना, संस्कार और शिक्षा मिलती है। इसलिए माता को प्रथम 'गुरु' की संज्ञा दी गई है।

कोलकाता। खिलाड़ियों के लिए आयोजित कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए खेल मंत्री मदन मित्रा, सचिव भ्राता गोपालिका, प्रो.ई.वी.गिरीश, खेल प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.शशि, ब्र.कु.जगवीर, ब्र.कु.मधु तथा अन्य।

समस्तीपुर। 'द्वादश ज्योतिर्लिंगम मेले' का उद्‌घाटन करते हुए डी.आर.एम. सत्यप्रकाश त्रिवेदी, एन.सी.पी.सिन्हा, उत्तर बिहार की संचालिका ब्र.कु.रानी दीदी तथा अन्य।

घूमरावी। ब्र.कु.प्रकाश को सम्मानित करते हुए विधायक राजेश धर्मानी, ब्र.कु.डॉली, ब्र.कु.ओमप्रकाश तथा अन्य।

. **एर्नाकुलम।** 'प्लेटिनम जुबली' पर आयोजित कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए फिल्म अभिनेता इडावेला बाबू, ए.जे.एंटोनी, स्वामी अमलेश्वानंद, सोनिया गिरी, पी.एन.शंकर तथा ब्र.कु.राधा।